B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper VII

Topic सत्यता एवं वैधता

Dr. Sachidanand Prasad
Dept of Philosophy
R.R.S. College, Mokama

सामान्यतः सत्यता एवं वैधता का आधार वस्तुगत अथवा वस्तुनिष्ठ होता है। यदि कोई कथन अथवा निष्कर्ष यथास्थिति के अनुकूल होता है तो उसे सत्य मानलिया जाता है। यह कथन सत्य है या नहीं? इसके प्रमाणीकरण हेतु उस यथार्थ से संबंधित अनुभव का प्राप्त होना अपेक्षित है। तर्कशास्त्र के अन्तर्गत उन्हीं वाक्यों को यथार्थ वाक्य के रूप में स्वीकार किया जाता है जो तर्कशास्त्र के नियमों के अनुकूल होते हैं। इसके अन्तर्गत वस्तुस्थिति की अनुभवजन्य आवश्यकता नहीं होती, यही कारण है कि इस विषय में सत्यता अथवा वैधता के उपरोक्त आशय को स्वीकार नहीं किया जाता है।

तर्कवाक्य तर्कशास्त्र की वैधता एवं अवैधता तथा सत्यता एवं असत्यता के आधारों में पर्याप्त भिन्नता है। तर्कवाक्य की वैधता और अवैधता का आधार युक्तियों के आकारात्मक गुण हैं तथा सत्यता और असत्यता का

आधार वाक्यों के गुण के रूप में निर्धारित किया गया है। अर्थात् कोई वाक्य वैध है अथवा नहीं इसका निर्धारण वाक्यों के आकार के आधार पर किया जाता है। इसीप्रकार कोई वाक्य सत्य है अथवा असत्य इसे सुनिश्चित करने के लिए वाक्य की प्रतिज्ञप्तियों के गुणों पर ध्यान देना पड़ता है। इसप्रकार निष्कर्ष के रूप में यह भी कहा जा सकता है कि युक्ति की वैधता अथवा अवैधता उसके आधार वाक्यों की सत्यता अथवा असत्यता पर आश्रित नहीं होती। इन दोनों में हम यह भी कह सकते हैं कि किसी युक्ति के अन्तर्गत आधार वाक्य सत्य अथवा असत्य हो सकते हैं, युक्ति वैध अथवा अवैध हो सकती है और इसी कारण निष्कर्ष भी सत्य अथवा असत्य हो सकते हैं। इसे हमलोग निम्नलिखित ढंग से समझ सकते हैं।

क्रम सँ	आधारवाक्य	युक्ति	निष्कर्ष
1.	सत्य	वैध	सत्य
2.	असत्य	वैध	असत्य
3.	सत्य	अवैध	सत्य
4.	सत्य	वैध	सत्य
5.	असत्य	अवैध	असत्य
6.	सत्य	वैध	सत्य
7.	असत्य	वैध	असत्य
8.	असत्य	अवैध	असत्य

उपरोक्त तालिका के आधार पर सत्यता एवं वैधता के संबंध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती है।

(1) वैध युक्ति एवं सत्य आधार वाक्यों के आधार पर सत्य निष्कर्ष प्राप्त होता है।

(2) यदि निष्कर्ष असत्य है तो वैध युक्ति का कोई न कोई आधार वाक्य भी सुनिश्चित रूप से असत्य होगा।

(3) असत्य आधार वाक्यों के माध्यम से सत्य निष्कर्ष प्राप्त नहीं हो सकता है।

तर्कशास्त्र में उसी युक्ति को वैध माना जाता है जिसमें निम्नलिखित नियमों का समावेश होता है।

(1) दोनों आधार वाक्य में कम से कम एक वाक्य को सामान्य होना चाहिए।

(2) दोनों आधार वाक्यों को निषेधात्मक के रूप में आधार पर किया जाना चाहिए।

(3) आधार वाक्यों के अन्तर्गत न्यूनतम एक बार मध्य पद को अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(4) दो निषेधात्मक वाक्यों के आधार पर किसी निष्कर्ष को प्राप्त नहीं किया जा सकता है इसलिए कम से कम एक आधार वाक्य को भावात्मक होना आवश्यक है।

(5) प्रत्येक युक्ति में तीन ही पद होना चाहिए, न कम न अधिक।